डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, पवित्र आत्मा और मसीह के साथ एकता, सत्र 20, मसीह के साथ एकता और व्यवस्थित धर्मशास्त्र, चर्च, संस्कार और ईसाई जीवन, इब्रानियों से प्रकाशितवाक्य तक

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्लेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा पवित्र आत्मा और मसीह के साथ एकता पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 20 है, मसीह के साथ एकता और व्यवस्थित धर्मशास्त्र, चर्च, संस्कार, ईसाई जीवन, और फिर इब्रानियों में रहस्योद्घाटन के माध्यम से मसीह के साथ एकता।

हम मसीह के साथ एकता के अपने अध्ययन को जारी रखते हैं।

वास्तव में, हम इसे समाप्त करते हैं, भगवान की इच्छा से, और हम मसीह के साथ मिलन और व्यवस्थित धर्मशास्त्र पर संक्षिप्त विचार करते हैं। हमने मसीह के साथ मिलन और बाइबिल धर्मशास्त्र पर अधिक ध्यान दिया, बाइबिल की कहानी के माध्यम से मिलन का पता लगाया। हमने इन व्याख्यानों में काफी व्यवस्थितकरण किया है क्योंकि मैं एक व्यवस्थित धर्मशास्त्री हूँ।

मैं इसमें कुछ नहीं कर सकता। लेकिन अब मैं औपचारिक रूप से बस कुछ बातों की याद दिलाना चाहता हूँ जो हमने चर्च के बारे में सीखी हैं और फिर अध्यादेशों या संस्कारों और ईसाई जीवन पर कुछ बात करना चाहता हूँ - मसीह के साथ एकता और व्यवस्थित धर्मशास्त्र, चर्च।

क्योंकि पौलुस मसीह के साथ एकता के बारे में पवित्रशास्त्र का मुख्य धर्मशास्त्री है, इसलिए हम उससे एकता और चर्च के बारे में सबसे ज़्यादा कहने की उम्मीद करते हैं, और वह निराश नहीं करता। फिर भी, अन्य बाइबिल लेखकों के पास इस विषय पर कहने के लिए महत्वपूर्ण बातें हैं, जैसे कि पतरस ने अपने दो पत्रों में और यूहन्ना ने अपने सुसमाचार, पहले पत्र और प्रकाशितवाक्य में। मैं सिर्फ एक रूपरेखा देने जा रहा हूँ क्योंकि हमने पहले ही इस बारे में बहुत कुछ कवर कर लिया है।

चर्च एक जीवित मंदिर है, जैसा कि हमने देखा है। चर्च पिता और पुत्र में रहता है, जैसा कि हमने जॉन के सुसमाचार के हमारे अध्ययन में देखा था। चर्च मसीह में है, जैसा कि हमने पॉल में व्याख्यान के बाद व्याख्यान में देखा था।

इसी तरह, चर्च यीशु की कहानी में भाग लेता है। हमने इसे पॉलिन के ग्रंथों और उनके विचारों के हमारे सारांश दोनों में देखा। चर्च मसीह का शरीर है।

चर्च मसीह की दुल्हन है, वही। जब हमने पॉल के चर्च के चित्रों को देखा, तो मुझे माफ कीजिए, हमने मसीह के शरीर और दुल्हन को पॉलिन के प्रमुख चित्रों, चर्च के रूपकों के रूप में देखा।

इसलिए हम संस्कारों या अध्यादेशों, अध्यादेशों की ओर मुड़ते हैं, क्योंकि वे मसीह द्वारा नियुक्त किए गए थे।

प्रभु के भोज में बपतिस्मा लेने का विचार प्रेरितों का नहीं था। यह चर्च के प्रभु का विचार था। मत्ती 28:19 और 20 में, उसने सभी राष्ट्रों के लोगों को शिष्य बनाने का आदेश दिया, जिसका अर्थ है सुसमाचार प्रचार, उन्हें तीन गुना नाम में बपतिस्मा देना और धर्मातरित लोगों को वह सिखाना जो यीशु ने उन्हें निर्देश दिया था।

और यीशु ने अपने शिष्यों के साथ जो अंतिम भोज किया, पहली सदी के यहूदी फसह में, उसने प्रभु के भोज की स्थापना की। इसलिए, हम उन्हें अध्यादेश कहते हैं क्योंकि मसीह ने उन्हें आदेश दिया और उन्हें दिया। हम उन्हें संस्कार कहते हैं क्योंकि वे पवित्र संकेत हैं जिनका उपयोग परमेश्वर अपने लोगों को अनुग्रह देने के लिए करता है।

मैं मसीह के साथ मिलन को संस्कारात्मक धर्मशास्त्र के दायरे में रखूँगा। पॉल के अध्ययन के कारण, मैं एक संस्कारात्मक धर्मशास्त्र को मानता हूँ जिसमें ईश्वर, न कि केवल मनुष्य, अपने लोगों के जीवन में कार्य करता है। शब्द और संस्कार के बीच समानता बहुत मदद करती है।

बपतिस्मा और प्रभु भोज ऐसे दृश्य शब्द हैं जो समारोह में सुसमाचार को दर्शाते हैं। यीशु चाहते थे कि उनका चर्च सुसमाचार को कभी न भूले, इसलिए उन्होंने चर्च को दिए गए दो समारोहों, ईसाई बपतिस्मा और प्रभु भोज में सुसमाचार संदेश को शामिल किया। इसका प्रमाण, सबसे स्पष्ट प्रमाण, 1 कुरिन्थियों 11:23 में है जहाँ पौलुस भोज के बारे में कहता है, जितनी बार तुम यह रोटी खाते हो और यह प्याला पीते हो, तुम प्रभु की मृत्यु की घोषणा करते हो जब तक कि वह न आए।

विश्वास में खाना-पीना मसीह के प्रायश्चित की घोषणा है। इस प्रकार, प्रभु भोज और ईसाई बपतिस्मा दृश्यमान शब्द हैं। वे सुसमाचार का अनुष्ठान हैं ताकि चर्च सुसमाचार को कभी न भूले।

यीशु ने अपने चर्च में सुसमाचार का प्रचार किया और बपतिस्मा तथा भोज के प्रत्यक्ष शब्दों के माध्यम से कृपापूर्वक सुसमाचार का प्रचार किया। मैं संस्कार शब्द के समानांतर को इस प्रकार समझता हूँ: क्योंकि वे परमेश्वर के वचन के दो रूप हैं, इसलिए शास्त्र लिखित शब्द, 2 तीमुथियुस 3:15, परमेश्वर का वचन जो तीमुथियुस ने अपनी माँ और दादी से सुना था, दोनों को प्रभावकारी मानता है, जब विश्वास से एकजुट होता है, और संस्कारों को।

प्रेरितों के काम 2:39 बपतिस्मा और क्षमा को जोड़ता है, जैसा कि प्रेरितों के काम 22:16 में भी है। 1 कुरिन्थियों 10:16 मसीह के साथ एकता को प्रभु के भोज से जोड़ता है। 1 पतरस 3:21 स्पष्ट रूप से कहता है कि बपतिस्मा अब आपको बचाता है।

लेकिन संस्कार अपने आप में उद्धार नहीं करते, यानी केवल कार्य करने से। बपतिस्मा प्राप्त व्यक्ति स्वतः ही उद्धार नहीं पाते। प्रभु भोज ग्रहण करने वाले व्यक्ति को स्वतः ही अनन्त जीवन नहीं मिलता।

संस्कार अपने आप में और अपने आप में उतना ही उद्धार करते हैं जितना कि वचन करते हैं। केवल वचन सुनने से उद्धार नहीं होता। लोग केवल वचन सुनने से ही नहीं, बल्कि वचन, उपदेश या पढ़े गए वचन के माध्यम से उनके पास आने वाले मसीह पर अपना विश्वास रखने से भी उद्धार पाते हैं।

रोमियों 10:17, विश्वास सुनने से आता है, और मसीह के बारे में वचन सुनने से। इसी तरह, न तो बपतिस्मा लेना और न ही प्रभु का भोज ग्रहण करना स्वचालित रूप से उद्धार करता है। लेकिन जब कोई सुसमाचार पर विश्वास करता है, चाहे वह प्रचार के माध्यम से या अध्यादेशों के माध्यम से संप्रेषित किया गया हो, तो वह बच जाता है।

उदाहरण के लिए, लोगों ने उद्धार के लिए मसीह पर विश्वास किया है क्योंकि वे संस्था के शब्दों के साथ भोज का पालन करते हैं। क्योंकि वहाँ, प्रभु की मृत्यु की घोषणा की जाती है। 1 कुरिन्थियों 11:26, मुझे लगता है कि मैंने पहले 23 कहा था।

परमेश्वर वचनों और विधियों दोनों के माध्यम से कार्य करता है। हालाँकि, उद्धार के लिए वचन आवश्यक है। मैं यहाँ एक महत्वपूर्ण योग्यता बता रहा हूँ।

उद्धार के लिए वचन आवश्यक है, और उद्धार के लिए संस्कार बिल्कुल आवश्यक नहीं हैं। उद्धार के लिए वचन आवश्यक है, जबकि विधियाँ आवश्यक नहीं हैं। 1 कुरिन्थियों 1:14-17, पौलुस कहता है, मैं प्रभु का धन्यवाद करता हूँ कि मैं तुम में से किसी को बपतिस्मा नहीं देता।

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि पॉल ने कहा, मैं प्रभु का धन्यवाद करता हूँ कि मैं आप में से किसी को भी सुसमाचार नहीं सुनाता? यह असंभव है। वह खुश था कि उसने उन्हें बपतिस्मा नहीं दिया क्योंकि वे पहले से ही गुटों में विभाजित थे। और निश्चित रूप से, अगर पॉल ने सचमुच कुछ लोगों को बपतिस्मा दिया होता, तो वे पॉल समूह में होते।

जिस तरह से उपदेश के प्रति हमारी प्रतिक्रिया महत्वपूर्ण है, उसी तरह से अध्यादेशों में सुसमाचार के प्रति हमारी प्रतिक्रिया भी महत्वपूर्ण है। बपतिस्मा प्राप्त व्यक्ति जो विश्वास से दूर चले जाते हैं, वे बचाए नहीं जाते। वे खुद पर निंदा लाते हैं।

जो लोग प्रभु भोज लेते हैं और उसके संदेश को अस्वीकार करते हैं, वे न्याय तक पहुँचते हैं, जैसा कि पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 11:27-32 में कहा है। आप में से बहुत से लोग कमज़ोर हैं। आप में से कुछ कमज़ोर हैं। आप में से कुछ बीमार हैं, और आप में से कुछ सो रहे हैं।

यह मृत्यु के लिए एक व्यंजना है। परमेश्वर कुरिन्थ के विश्वासियों पर अस्थायी न्याय ला रहा था, शाश्वत न्याय नहीं, हालाँकि, क्योंकि अगला श्लोक कहता है, और मुझे इसे बेहतर ढंग से समझना चाहिए, इसे सही तरीके से पढ़ना चाहिए, कि जब ऐसा होता है, तो उन्हें प्रभु द्वारा अनुशासित किया जा रहा है ताकि वे दुनिया के साथ निंदा न करें। इसलिए मैंने अभी जिन न्यायों का उल्लेख किया है, यही कारण है कि आप में से कुछ, आप में से कई, 1 कुरिन्थियों 11:30, कमजोर और बीमार हैं, और कुछ मर गए हैं।

ईसवी इस आकृति का अनुवाद सोए हुए या सो गए के रूप में करता है। लेकिन अगर हम खुद का न्याय करते, तो हमारा न्याय नहीं होता। लेकिन जब प्रभु द्वारा हमारा न्याय किया जाता है, तो हमें अनुशासित किया जाता है ताकि हम दुनिया के साथ दोषी न ठहराए जाएँ।

वे लौकिक न्याय, कमजोरी, बीमारी और मृत्यु हैं। प्रभु की ओर से शक्तिशाली औषधि, लेकिन फिर भी अपने लोगों को बचा रहा है क्योंकि वह उन पर क्रोधित है क्योंकि वे अपने जीवन में भोज के संदेश को गलत तरीके से प्रस्तुत कर रहे थे, जो, जैसा कि हमने देखा, मसीह के साथ ऊर्ध्वाधर एकता है, तत्वों में विश्वासपूर्वक भागीदारी के माध्यम से उसके शरीर और रक्त में भागीदारी, और फिर एक दूसरे के साथ क्षैतिज एकता। हम सभी एक शरीर हैं, क्योंकि हम सभी एक रोटी का हिस्सा लेते हैं जब इसे मण्डली के चारों ओर बांटा जाता है।

लेकिन वे अन्य विश्वासियों के साथ एक नहीं हो रहे थे। कुछ लोग भव्य रात्रिभोज खा रहे थे और अपने साथियों को अगापे में भूखा रहने दे रहे थे, जो कुरिन्थ में प्रभु के भोज से जुड़ा सहभागिता भोजन है। पौलुस बिल्कुल भी खुश नहीं है, और परमेश्वर अपने लोगों को सुधारने के लिए उन पर अपने लौकिक न्याय ला रहा है।

उपदेश देने और अध्यादेशों को लागू करने में मुख्य कार्यकर्ता कौन है? कोई भी इंजील प्रचारक यह पुष्टि करेगा कि वह केवल ईश्वर का प्रवक्ता है, मुख्य प्रचारक, कैपिटल पी, उसके माध्यम से काम कर रहा है। दूसरा कुरिन्थियों 520, हम ईश्वर की ओर से, मसीह की ओर से, ईश्वर की ओर से आपसे विनती करते हैं, ईश्वर से मेल-मिलाप कर लें। दूसरा कुरिन्थियों 520, मुझे इसे सही से समझने दें, इसलिए हम मसीह के लिए राजदूत हैं, ईश्वर हमारे माध्यम से अपनी अपील कर रहा है, हम मसीह की ओर से आपसे विनती करते हैं, ईश्वर से मेल-मिलाप कर लें।

यह परमेश्वर द्वारा प्रेरितों के माध्यम से अपनी अपील है। और इसलिए, यह सुसमाचार के प्रचारक के साथ व्युत्पन्न अर्थ में है। प्रचारक सुसमाचार का प्रचार करता है, लेकिन परमेश्वर मानव प्रचारक के माध्यम से अनन्त जीवन और क्षमा की अपनी पेशकश कर रहा है, जो केवल उसका प्रवक्ता है।

अगर कोई इस बात पर विश्वास नहीं करता, तो वह प्रचार करना बंद कर देता। भगवान संस्कारों के मुख्य मंत्री भी हैं। यह वह इंसान नहीं है जो बपतिस्मा देता है या प्रभु भोज परोसता है जो अनुग्रह देता है।

यह परमेश्वर ही है जो बपतिस्मा और भोज में दृश्य वचन के माध्यम से अपने लोगों से वादे करता है, जिनका उन्हें जवाब देना चाहिए। परमेश्वर प्रभु के भोज के दृश्य वचनों में वादा करता है और जब वह विश्वास से पूरा होता है तो अपना वादा पूरा करता है। केवल संस्कारात्मक कार्य करने से उद्धार नहीं होता।

इस प्रकार मैं यूचरिस्ट के बारे में रोमन कैथोलिक और लूथरन दोनों की समझ को अस्वीकार करता हूँ। रोटी और शराब पर ध्यान केंद्रित करना एक गलती है। इसके बजाय, ध्यान मसीह पर होना चाहिए, जिसने हमसे प्यार किया और हमारे लिए खुद को दे दिया।

वह पवित्र आत्मा के माध्यम से स्वर्ग से अनुग्रह प्रदान करता है। आत्मा ही वह कड़ी है, जो स्वर्ग में विराजमान मसीह और विश्वासयोग्य सहभागियों के बीच संबंध है। आत्मा वास्तव में और आध्यात्मिक रूप से, लेकिन शारीरिक रूप से नहीं, मसीह के प्रायश्चित के लाभों को विश्वास करने वाले प्रतिभागियों तक पहुँचाती है।

इस प्रकार भोज मसीह द्वारा नियुक्त एक साधन है जिसके द्वारा वह विश्वास करने वालों को अनुग्रह प्रदान करता है। सिंक्लेयर फर्ग्यूसन ने पवित्र आत्मा पर अपनी बहुत अच्छी पुस्तक में एक उद्धरण दिया है। उद्धरण, भोज में आत्मा की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है।

केवल उनके कार्य को समझकर ही हम उन गलतियों में पड़ने से बच सकते हैं जो कैथोलिक, कैपिटल सी, एक्स ऑपरे ऑपरेटो, केवल कार्य करने से अनुग्रह दिया जाता है, और भोज की इंजील स्मारकीय समझ दोनों को परेशान करती हैं। यह एक मात्र प्रतीक है, और वास्तव में कोई अनुग्रह संप्रेषित नहीं किया जाता है। यह चर्च के प्रशासन या केवल हमारी यादों की गतिविधि से नहीं होता है, बल्कि आत्मा के माध्यम से हम क्रूस पर चढ़ाए गए, जी उठे और अब महिमामंडित मसीह के साथ संगति का आनंद लेते हैं।

क्योंकि मसीह रोटी और शराब में स्थानीयकृत नहीं है, कैथोलिक दृष्टिकोण, न ही वह भोज से अनुपस्थित है जैसे कि हमारी सर्वोच्च गतिविधि उसे याद कर रही थी, स्मारकवादी दृष्टिकोण। बल्कि, वह आत्मा द्वारा तत्वों के माध्यम से जाना जाता है। भोज में मसीह के साथ एक वास्तविक संवाद है।

जैसे कि वचन के प्रचार में, वह बाइबल में स्थानीय रूप से या विश्वास करके नहीं बल्कि आत्मा की सेवकाई द्वारा उपस्थित होता है। इसी तरह, वह भोज में भी उपस्थित होता है, रोटी और दाखमधु में नहीं, बल्कि आत्मा की शक्ति से। मसीह का शरीर और लहू तत्वों में बंद नहीं है क्योंकि वह पिता के दाहिने हाथ पर है, प्रेरितों के काम 3:21। लेकिन आत्मा की शक्ति से, हम उसकी उपस्थिति में लाए जाते हैं, और वह हमारे बीच खड़ा होता है।

मैं पुष्टि करता हूँ कि बपतिस्मा और प्रभु भोज का सबसे बुनियादी, व्यापक और गहरा अर्थ एक ही है, मसीह के साथ एकता। इससे एक समस्या उत्पन्न होती है। यदि बपतिस्मा और भोज दोनों ही मसीह के साथ एकता को दर्शाते हैं, तो उनके बीच क्या अंतर है? क्या भोज बपतिस्मा का दोहराव मात्र है? इन प्रश्नों का उत्तर बपतिस्मा में दर्शाए गए मसीह के साथ आरंभिक एकता को भोज में दर्शाए गए मसीह के साथ निरंतर एकता से अलग करने में निहित है।

इससे और भी सवाल उठते हैं। क्या मसीह के साथ हमारा आरंभिक मिलन अपर्याप्त है और इसे बढ़ाने की आवश्यकता है? भोज में ऐसा क्या है जो बपतिस्मा में नहीं होता? यहाँ उत्तर इस बात को समझने में निहित है कि मसीह के साथ हमारा एक बार का मिलन, जो बपतिस्मा में दर्शाया गया है, मजबूत और स्फूर्तिदायक है। कैल्विन, मैंने कुछ व्याख्यान पहले तक पहुँचने की कोशिश की, लेकिन मैं उन्हें नहीं ढूँढ़ पाया।

बपतिस्मा में मसीह के साथ हमारा एक बार का मिलन, विश्वास में प्रभु के भोज में भाग लेने से मजबूत और स्फूर्तिदायक होता है। हम इसे बेहतर ढंग से समझ सकते हैं यदि हम इसकी तुलना क्षमा से करें। हम मसीह से एक बार और हमेशा के लिए क्षमा प्राप्त करते हैं, एक परिवर्तन, फिर भी हम अपने पापों को स्वीकार करने पर उनसे प्रतिदिन क्षमा प्राप्त करते हैं।

विवाह से जुड़ा एक उदाहरण मददगार है। हम स्थायी रूप से विवाहित हैं। इस उदाहरण में तलाक की अनुमति नहीं है।

हम दोबारा शादी नहीं करते क्योंकि हम अपने जीवनसाथी से प्यार करते हैं और सालों से उनके साथ संगति करते आए हैं। हमारी शादी का दिन अंत नहीं बल्कि एक आजीवन रिश्ते की शुरुआत है जो हमारे संवाद और साथ चलने से बढ़ता है। हमारे आध्यात्मिक जीवन में भी यही होता है।

जब हम मसीह पर भरोसा करते हैं, जैसा कि सुसमाचार में बताया गया है, तो परमेश्वर हमें हमेशा के लिए अपने पुत्र से जोड़ देता है। लेकिन जब हम उससे प्रेम करते हैं, उसके साथ चलते हैं और उसकी इच्छा पूरी करते हैं, तो उसके साथ हमारा रिश्ता और भी मजबूत होता है। कैल्विन के दृष्टिकोण का सारांश देते हुए मैथेसन ने संक्षिप्त रूप से कहा है।

बपतिस्मा का संस्कार मसीह के साथ विश्वासी के प्रारंभिक मिलन से जुड़ा है। प्रभु भोज का संस्कार मसीह के साथ विश्वासी के निरंतर मिलन से जुड़ा है। प्रभु भोज में, विश्वासी को पोषण और पोषण मिलता है, और मसीह के साथ उसका मिलन और मिलन मजबूत और बढ़ता है।

प्रभु भोज पर मैथेसन की पुस्तक आपके लिए दी गई है। ईसाई धर्म, व्यवस्थित धर्मशास्त्र, मसीह के साथ एकता के संबंध में हमारा अंतिम पहलू ईसाई जीवन है। और यहाँ, हमने वास्तव में बहुत कुछ कहा है।

मैं कुछ बातों को एक साथ जोड़ना चाहता हूँ। मसीह के साथ एकता पवित्रशास्त्र में प्रकट की गई है और फिर भी यह मानवीय समझ से परे है। यह अनंत काल से अनंत काल तक, चुनाव से पुनरुत्थान तक उद्धार की योजना के लिए एक सामान्य शब्द है।

यह उद्धार के अनुप्रयोग के लिए भी एक विशिष्ट शब्द है क्योंकि वास्तविक मिलन केवल वास्तविक लोगों के साथ ही हो सकता है। यह उद्धार के अनुप्रयोग के सभी पहलुओं पर छत्रछाया है और उन्हें एक साथ रखने वाला गोंद भी है। मसीह के साथ मिलन का ईसाई जीवन पर बहुत बड़ा प्रभाव है।

यह ईसाई पहचान का निर्माण करता है। विश्वासी मसीह में हैं, उद्धार में उनके साथ घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। मसीह और ईसाइयों के बीच एकता पवित्र आत्मा द्वारा लाई जाती है और यह व्यापक, महत्वपूर्ण और स्थायी है।

विश्वासी सामूहिक रूप से और व्यक्तिगत रूप से मसीह से जुड़े हुए हैं। आश्चर्यजनक रूप से, वे और पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा परस्पर एक दूसरे में निवास करते हैं। विश्वास के माध्यम से

अनुग्रह द्वारा, वे यीशु की कहानी में उसके क्रूस पर चढ़ने से लेकर उसके दूसरे आगमन तक भाग लेते हैं।

और तभी उनकी पहचान पूरी तरह से जानी जाएगी। मसीह के साथ एकता का मतलब है मसीह से संबंधित होना। उद्धार में पवित्र आत्मा का सबसे महत्वपूर्ण कार्य, जैसा कि हमने इन व्याख्यानों की शुरुआत में कहा, हमें नए वाचा के मध्यस्थ, यीशु मसीह से जोड़ना है।

परिणामस्वरूप, वह हमारा है, और हम हमेशा के लिए उसके हैं। क्योंकि हम मसीह के हैं, इसलिए हम उसके साथ संगति रखते हैं, जो पत्नी और पति की अंतरंग संगति के समान है। हम मसीह की दुल्हन हैं, और वह हमसे बहुत प्यार करता है।

परिणामस्वरूप, हम पवित्र त्रिदेव, विशेष रूप से पवित्र आत्मा द्वारा निवास करते हैं। मसीह के साथ एकता का अर्थ है वर्तमान पीड़ा और भविष्य की महिमा। क्योंकि हम उसकी मृत्यु में उसके साथ पहचाने जाते हैं, इसलिए हम उसके दुखों में भागीदार होते हैं।

हम विश्वास के द्वारा अनुग्रह से बचाए जाते हैं और उसी तरह, विश्वास के द्वारा अनुग्रह से दृढ़ रहते हैं। जब परमेश्वर अपने लोगों को कष्ट सहना पड़ता है, तो वे उसे मजबूत करते हैं, और वे अंत तक धीरज धरते हैं। रहस्यमय तरीके से, उसका अनुग्रह उन्हें दृढ़ रहने में सक्षम बनाता है, और वे सक्रिय रूप से खुद को दृढ़ रखते हैं।

परिणामस्वरूप, सच्चे विश्वासी मसीह से पूरी तरह और अंततः दूर नहीं होते। इसके बजाय, वे विश्वास में बने रहते हैं और अंततः मसीह के पुनरुत्थान की महिमा में भागीदार होंगे। जिस तरह से उन्होंने उसके साथ दुख उठाया, उसी तरह वे हमेशा के लिए नई पृथ्वी पर उसके साथ राज्य करेंगे।

परमेश्वर की महिमा हो। मेरे पास कुछ और बाइबिल सामग्री है जो पॉल के बाद नए नियम के बाकी हिस्सों में मसीह के साथ एकता से संबंधित है। इब्रानियों में, 1 और 2 पतरस में, 1 यूहन्ना में, और फिर संक्षेप में प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में मसीह के साथ एकता।

इब्रानियों में मसीह के साथ एकता। हालाँकि इस मामले पर बहस हो रही है, लेकिन मैं इब्रानियों 3:14 को मसीह के साथ एकता से संबंधित मानता हूँ। जब लेखक लिखता है, तो हम मसीह में भागीदार बन जाते हैं।

यदि हम अंत तक अपने मूल विश्वास को दृढ़ बनाए रखते हैं, तो वह और अधिक कह रहा है कि हम मसीह के साथी या भागीदार हैं। वह कह रहा है कि हम मसीह में भागीदार हैं। हम उसके भागीदार हैं।

इब्रानियों 3:14 में लेखक द्वारा इस्तेमाल किए गए शब्द, हिस्सेदार या सहभागी, मेटाकोई के अन्य उदाहरण इस बात को साबित करते हैं। तुम जो स्वर्गीय बुलाहट में सहभागी हो, 3:1। जिन्होंने पवित्र आत्मा में हिस्सा लिया है, 6:4। अनुशासन जिसमें सभी ने हिस्सा लिया है, 12:8। लेखक तब

सिखाता है कि हम मसीह में सहभागी हैं और उन्होंने हमारे लिए क्या हासिल किया है। इसका मतलब है कि हम परमेश्वर के पुत्र और उसके उद्धारक लाभों में सहभागी हैं।

विश्वास के माध्यम से परमेश्वर की कृपा से, हम उसके व्यक्तित्व और कार्य में भाग लेते हैं। यह सत्य इब्रानियों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और आज हमारे जीवन के लिए भी ऐसा ही कर सकता है। इब्रानियों के मूल पाठक, इब्रानियों के मूल पाठक, जिन्हें लेखक बार-बार कठिन परिस्थितियों में दृढ़ रहने के लिए प्रोत्साहित करता है, उन्हें ऐसा करने के लिए प्रोत्साहन की आवश्यकता है।

लेखक ने चेतावनियों के बीच भी महत्वपूर्ण स्थानों पर यह प्रोत्साहन दिया है, 6:9 और 10:39 देखें। और 3:14 में बहुत प्रोत्साहन दिया गया है। जो लोग भयंकर प्रलोभनों और पाप के कठोर प्रभावों के कारण ईसाई मैराथन को छोड़ने के लिए प्रेरित हुए, उनके लिए लेखक ने घोषणा की, उद्धारण, हम मसीह में भागीदार बनने आए हैं। यदि हम वास्तव में अपने मूल आत्मविश्वास को अंत तक दृढ़ रखते हैं, तो उद्धारण, दुनिया भर में मसीह के चर्च को आज भी यही शब्द सुनने की आवश्यकता है।

1 और 2 पतरस में मसीह के साथ एकता। पतरस ने जीवित पत्थर मसीह में विश्वासियों को जीवित पत्थरों के रूप में दर्शाया है, जब वे सेवा में उसके पास आते हैं। 1 पतरस 2 :4. वे जीवित हैं क्योंकि वे जीवित पत्थर के संपर्क में आए हैं और उनसे अनन्त जीवन प्राप्त किया है जो उनके लिए मर गए और मसीह के साथ एकता के आधार पर जी उठे।

वे पुनरुत्थान जीवन प्राप्त करते हैं और नया जन्म लेते हैं। 1:2. 1:23. परमेश्वर इन जीवित पत्थरों का उपयोग एक आत्मिक घर बनाने के लिए करता है जहाँ विश्वासी याजक मसीह के द्वारा परमेश्वर की आराधना करते हैं। 1 पतरस 2:5. पतरस द्वारा चर्च को एक आत्मिक मंदिर के रूप में दर्शाए जाने की छवि मसीह के साथ व्यक्तिगत और सामुदायिक एकता के विचारों को व्यक्त करती है।

1:11, 4:13, और 5:1 में मसीह के दुख और महिमा के बारे में पहले ही बता देने के बाद, पतरस अब मसीहियों पर मसीह के दुख और महिमा को लागू करता है। पहले से ही, उद्धारण, पहले से ही आप दुख उठा चुके हैं। परमेश्वर जिसने आपको मसीह में अपनी अनन्त महिमा के लिए बुलाया है, वह स्वयं आपको बहाल करेगा, पुष्टि करेगा, मजबूत करेगा और स्थापित करेगा।

5:10. जैसे मसीह ने दुख उठाया और अपनी महिमा में प्रवेश किया, वैसे ही मसीही भी उसका अनुसरण करते हैं। सभी अनुग्रहों का परमेश्वर उन पीड़ित विश्वासियों को सक्षम करेगा, जिनके बारे में पतरस ने कहा है कि वे अंत तक धीरज धरेंगे, जहाँ उन्हें पुनरुत्थान में अनन्त महिमा प्राप्त होगी। परमेश्वर ने अपने लोगों को मसीह में अपनी अनन्त महिमा के लिए बुलाया है।

पद 10. मसीह को महिमा के साथ ले जाने से, मैं समझता हूँ कि पतरस का मतलब है कि परमेश्वर हमें मध्यस्थ मसीह के माध्यम से अपनी अनन्त महिमा में ले जाएगा। बेस्ट, अर्नेस्ट बेस्ट ने पतरस के संदेश का सारांश दिया है।

विश्वासी मसीह के चर्च के सदस्य हैं और उन्हें उसकी महिमा में अंतिम भागीदारी का आश्वासन दिया जाता है, उद्धरण, केवल मसीह में और उसके माध्यम से परमेश्वर की गतिविधि के कारण। पतरस, एक साथी एल्डर और मसीह के कष्टों का गवाह और साथ ही 5:1 से प्रकट होने वाली महिमा का भागीदार, ये शब्द आते हैं। पतरस प्रार्थना करता है कि परमेश्वर अपने पाठकों को उनके ज्वलंत परीक्षण के बीच शांति प्रदान करे।

4:12. वह अपने पत्र का समापन इन शब्दों से करता है, उद्धरण, आप सभी को शांति जो मसीह में है। 5.14. पौलुस की तरह ही, पतरस ने अपने अंतिम अभिवादन में मसीह में होने का संदर्भ शामिल किया है। वह अपने सभी पाठकों को शांति प्रदान करता है जो मसीह में हैं।

यहाँ मसीह में का अर्थ केवल ईसाई ही नहीं है, बल्कि पतरस के पाठकों के मसीह के साथ नए रिश्ते, उनके साथ उनके आध्यात्मिक बंधन की भी बात करता है। पीटर डेविड्स पतरस के तीन मसीह भाषा के उपयोगों को एक साथ जोड़ते हैं जब वह पतरस के श्रोताओं के बारे में कहते हैं, उद्धरण, उनकी अच्छी जीवनशैली, 3:16, उनकी भविष्य की आशा, 5:10, और उनकी वर्तमान शांति सभी मसीह के साथ उनके रिश्ते, उनके साथ उनकी पहचान के कारण हैं। 2 पतरस और यहूदा के बारे में डेविड के पत्र।

पतरस ने प्रसिद्ध रूप से कहा कि परमेश्वर के अनमोल और बहुत महान वादों के माध्यम से, आप ईश्वरीय स्वभाव के भागीदार बन सकते हैं, 2 पतरस 1:4। ये शब्द परमेश्वर और उसके प्राणियों के बीच के अंतर को नहीं मिटाते। प्रेरित का मतलब यह नहीं है कि हम परमेश्वर बन जाते हैं या परमेश्वर का हिस्सा बन जाते हैं। बल्कि, जब वह ईश्वरीय स्वभाव के भागीदार बनने के बारे में लिखता है, तो वह ईसाइयों के बारे में बात करता है जो परमेश्वर की नैतिक उत्कृष्टता में से कुछ में हिस्सा लेते हैं।

पद तीन। अगले ही शब्द उसकी व्याख्या की पुष्टि करते हैं, क्योंकि पतरस आगे कहता है, पापमय अभिलाषा के कारण संसार में व्याप्त भ्रष्टाचार से बचकर निकल आया है। उद्धरण समाप्त, पद चार।

परमेश्वर के स्वभाव में भाग लेने का अर्थ है संसार के भ्रष्टाचार से बचना। परमेश्वर चाहता है कि विश्वासी मसीह के नैतिक गुणों में हिस्सा लें। हालाँकि ये नैतिक गुण हममें दूसरे आगमन पर ही परिपूर्ण होंगे, फिर भी अभी भी हमारे अन्दर वास करने वाली आत्मा के द्वारा, हम एक हद तक परमेश्वर के समान बनने में सक्षम हैं।

1 यूहन्ना में मसीह के साथ एकता। 1 यूहन्ना के पास मसीह के साथ एकता के बारे में हमें सिखाने के लिए बहुत कुछ है। अपने सुसमाचार से एकता की अभिव्यक्तियों को फिर से दोहराते हुए, यूहन्ना ने अपने पहले पत्र में एकता के लिए दो रूपकों का इस्तेमाल किया है।

सबसे पहले, वह परमेश्वर या मसीह के हमारे अंदर होने और हमारे मसीह में होने की बात करता है। दूसरा, वह कहता है कि हम मसीह या परमेश्वर में रहते हैं और मसीह या परमेश्वर हमारे अंदर रहते हैं। परमेश्वर या मसीह हमारे अंदर है, और हम मसीह में हैं।

एक बार, 1 यूहन्ना कहता है कि परमेश्वर या मसीह आप में है। चार, चार। संदर्भ आध्यात्मिक युद्ध की चेतावनी देता है।

यह मसीह विरोधी की आत्मा के बारे में बताता है जो झूठे भविष्यद्वक्ताओं को ऊर्जा प्रदान करती है जो पुत्र के अवतार को अस्वीकार करते हैं। 1 यूहन्ना चार की आयत एक से तीन। यूहन्ना के पाठकों को डर से कांपना नहीं चाहिए, क्योंकि उनके शक्तिशाली विजेता ने उनके लिए शत्रु पर विजय प्राप्त की है।

परिणामस्वरूप, "तुमने उन पर विजय प्राप्त की है क्योंकि जो तुम में है वह उससे बड़ा है जो संसार में है - पद चार। न तो यूहन्ना और न ही उसके पाठकों को खुद पर भरोसा रखना चाहिए। बल्कि, उनकी जीत मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान में उसकी उपलब्धि और उनके जीवन में उसकी उपस्थिति के कारण सुनिश्चित है। यह शक्तिशाली विजयी उपस्थिति है जिसकी ओर यूहन्ना इशारा करता है जब वह कहता है कि जो तुम में है वह उससे बड़ा है जो संसार में है।"

मसीह शैतान और मसीह विरोधी से अधिक शक्तिशाली है और उसने उन पर विजय प्राप्त की है। इसके अलावा, यह विजयी मसीह अपने लोगों में वास करता है, उन्हें अपनी सर्वशक्तिमान उपस्थिति के माध्यम से अंततः विजय का आश्वासन देता है। दो बार, यीशु का जिक्र करते हुए, 1 यूहन्ना कहता है कि हम उसमें हैं।

1 यूहन्ना 2:4-6. 1 यूहन्ना 5:20. यह अभिव्यक्ति कि हम उसमें, यीशु में हैं, इसका अर्थ है कि हमारे पास अनन्त जीवन है या हम पुत्र को जानते हैं।

1 यूहन्ना के पास उद्धार पाने के बारे में बात करने के तीन तरीके हैं। एक सच्चे विश्वासी होने का मतलब है पुत्र में होना। उसके साथ एकता में रहना।

पहले अंश में, उसमें होना परमेश्वर की आज्ञा मानने से अविभाज्य है। दूसरे अंश में, उसमें होना मसीह को संज्ञानात्मक और व्यक्तिगत रूप से जानने के साथ सहसंबंधी है। यारब्रो के शब्दों को दोहराना ज़रूरी है, उद्धारण, मसीह या परमेश्वर में होना जैसा कि 1 यूहन्ना ने दर्शाया है, वह अवस्था है पुत्र के माध्यम से परमेश्वर पिता को उसके साथ संबंध के माध्यम से पूरी तरह से जानना।

पिता को अपने अंदर जीवित रखना, उसका काम करना। 1 यूहन्ना के अनुसार, परमेश्वर के पुत्र में होना उद्धार की अनिवार्य शर्त है।

मैं यारब्रो के लिए उद्धारण पहले ही समाप्त कर चुका हूँ। यह पुत्र द्वारा वास किए जाने की पूर्वधारणा करता है, जिसका अर्थ है उसमें वास करना या उसमें होना। यह हमें चौथे सुसमाचार की पारस्परिक वास की उच्च शिक्षा की ओर वापस ले जाता है, जो यूहन्ना में एकता के लिए दूसरे रूपक का एक पहलू है।

जॉन के पत्रों पर यारब्रो की टिप्पणी वही थी जिसका मैं जिक्र कर रहा था, रॉबर्ट यारब्रो - मसीह या ईश्वर में बने रहना और मसीह या ईश्वर का हम में बने रहना। सबसे पहले, जॉन भी बने रहने के संदर्भ में एकता की बात करता है।

अक्सर, यूहन्ना मसीह में बने रहने वाले विश्वासियों की बात करता है, जिसके नैतिक निहितार्थ हैं। जो मसीह में बने रहने का दावा करता है, उसे यीशु के उदाहरण का अनुसरण करना चाहिए, 2:6। इसी तरह, यूहन्ना समझाता है, उद्धरण, जो कोई उसमें बना रहता है, वह पाप नहीं करता, 3:6। दो बार संक्षिप्त रूप से, यूहन्ना मसीहियों को मसीह में बने रहने की आज्ञा देता है। पहली बार यह आज्ञा पवित्र आत्मा द्वारा विश्वासियों को दिए जाने वाले शिक्षण, उसके अभिषेक, 2:27 से जुड़ी है। दूसरी बार, इस आज्ञा का पालन करना मसीह की वापसी के लिए विश्वासियों को तैयार करता है, 2:28। एक बार यूहन्ना ने घोषणा की कि यदि वे उस सत्य में बने रहते हैं जो उन्हें तब सिखाया गया था जब उन्होंने पहली बार सुसमाचार पर विश्वास किया था, तो वे पुत्र और पिता में बने रहेंगे, उद्धरण, 1 यूहन्ना 2:24। यह एकमात्र ऐसा समय है जब मसीहियों को एक से अधिक दिव्य व्यक्ति में बने रहने के लिए कहा गया है।

इन सभी बातों को जॉन के सुसमाचार में बने रहने के बारे में जॉन की शिक्षा के विस्तार और अनुप्रयोग के रूप में देखा जाना चाहिए। यारब्रो ने सटीक रूप से सारांश दिया है। बने रहना, "1 जॉन में मसीह के प्रति विश्वासियों के अभ्यस्त व्यक्तिगत लगाव के लिए लगभग सर्वव्यापी संक्षिप्त रूप बन गया है। उदाहरण के लिए, 2:6 और 28। या विश्वासियों में ईश्वर की बचत करने वाली सच्चाई की उपस्थिति के लिए। उदाहरण के लिए, 2:24, 2:27, 3:9।"

यारब्रो, 1 से 3 जॉन उनकी टिप्पणी का नाम है। मसीह में परमेश्वर के साथ इस गहरे व्यक्तिगत संबंध के साथ नैतिक दायित्व भी आते हैं जिन्हें हमने ऊपर देखा है। जॉन आसान विश्वासवाद का समर्थन नहीं करता है।

इसके विपरीत, 1 यूहन्ना नैतिक रूप से कठोर है। यूहन्ना मसीह में परमेश्वर के साथ विश्वासियों के व्यक्तिगत संबंध और संबंधित नैतिक जिम्मेदारियों को उच्च स्तर पर ले जाता है, यह सिखाकर कि परमेश्वर और उसके लोगों के बीच बने रहना पारस्परिक है। 1 यूहन्ना दो बार कहता है कि परमेश्वर हमारे अंदर रहता है, 3:24, 4:12। चार बार यह परमेश्वर के साथ बने रहने को पारस्परिक के रूप में बताता है।

उसकी आज्ञाओं को मानता है, वह परमेश्वर में बना रहता है, और परमेश्वर उसमें बना रहता है, 1 यूहन्ना 3:24। इसी से हम जानते हैं कि हम उसमें बने रहते हैं, और वह हम में, क्योंकि उसने हमें अपनी आत्मा दी है, 4:13। जो कोई यह मान लेता है कि यीशु ही मसीह है, परमेश्वर का पुत्र है, वह उसमें बना रहता है और वह परमेश्वर में। मैं इसे फिर से करूंगा। जो कोई यह मान लेता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, परमेश्वर उसमें बना रहता है और वह परमेश्वर में, 4:15। परमेश्वर प्रेम है और जो कोई प्रेम में बना रहता है, वह परमेश्वर में बना रहता है, और परमेश्वर उसमें बना रहता है, 4:16। परमेश्वर के साथ पारस्परिक रूप से बने रहने के वे चार संदर्भ 3:24, 4:13, 4:15, 4:16 हैं। 1 यूहन्ना 3:24 एक महत्वपूर्ण भूमिका ग्रहण करता है क्योंकि यहाँ पहली बार हम परमेश्वर और मसीहियों के बीच पारस्परिक बने रहने का सामना करते हैं।

हम न केवल मसीह के साथ ऐसे व्यक्तिगत और अंतरंग संबंध का आनंद लेते हैं, बल्कि उसका भी हमारे साथ ऐसा ही संबंध है। यह विश्वासियों का एक अद्भुत सत्य है जो ईश्वरीय पेरिकोरेसिस या पारस्परिक निवास में विश्वास के माध्यम से अनुग्रह द्वारा एक निश्चित अर्थ में साझा करता है जिसे हमने जॉन के सुसमाचार में पाया है। और, बेशक, इस तरह के विशेषाधिकार में नैतिक अर्थ निहित हैं।

जॉन ने पारस्परिक पालन की भाषा को नैतिक दायित्व के साथ जोड़ा है। पारस्परिक पालन उन लोगों के लिए सही है जो ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करने की विशेषता रखते हैं, 1 यूहन्ना 3:24। यह स्वीकार करना कि यीशु ईश्वर का पुत्र है, 4:15 और प्रेम में बने रहना, 3:14। अध्ययन के लिए, हम ईश्वर या मसीह के हमारे अंदर होने और हमारे मसीह में होने की बात को यूहन्ना के अध्ययन से अलग करते हैं, यूहन्ना के यह कहने से कि हम मसीह या ईश्वर में रहते हैं और मसीह या ईश्वर हमारे अंदर रहते हैं। लेकिन अब यह स्वीकार करने का समय आ गया है कि दोनों मूल रूप से समानार्थी हैं जैसा कि रेमंड ब्राउन संकेत देते हैं, उद्धरण, में होना और में रहना लगभग एक दूसरे के स्थान पर इस्तेमाल होने वाले भाव हैं।

एक और विषय पर बात करना उचित है, विश्वासियों के बने रहने में पवित्र आत्मा की भूमिका। यूहन्ना दो बार इस बारे में बात करता है, 3:24 और 4:12 और 13. जबकि यूहन्ना पवित्र आत्मा को उतनी बड़ी भूमिका नहीं देता जितना पौलुस के विचारों में निभाता है, लेकिन 1 यूहन्ना में वह एक छोटी भूमिका निभाता है।

ऊपर दिए गए दो ग्रंथों में, आत्मा की सेवकाई ईसाइयों को मसीह में उनके बने रहने के बारे में जागरूक करने के लिए है। यारब्रो ने इस सत्य को मददगार तरीके से रेखांकित किया है और मैं उद्धृत करता हूँ, यूहन्ना और उसके पाठक परमेश्वर में उनके बने रहने को जानते हैं या पहचानते हैं और परमेश्वर ने उन्हें जो आत्मा दी है उसके आधार पर उनका उनमें बने रहना, 2:18 से 3:8 देखें। यह यूहन्ना द्वारा 3:24 में पहले से दिए गए कथन के समान है। आत्मा एक कड़ी है, यहाँ तक कि एक एजेंट भी है, जो विश्वासियों को इस पारस्परिकता को देखने की अनुमति देता है कि यह क्या है, उनके बीच परमेश्वर की उपस्थिति का एक संकेत, उन्हें प्राप्त संदेश की सत्यता और उस नैतिकता के महत्व का आश्वासन देता है जिसे अपनाएने के लिए उन्हें बुलाया जा रहा है, यारब्रो, 1 से 3 यूहन्ना - अंत में, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में मसीह के साथ एकता के बारे में कुछ शब्द।

नरक के बारे में कड़े शब्दों और 14:9 से 12 में विश्वासियों को दृढ़ रहने के आह्वान के बाद, यूहन्ना सांत्वना देने वाले शब्द कहता है। प्रकाशितवाक्य 14, शाश्वत दंड के बारे में शास्त्र में सबसे कड़े शब्दों में से कुछ यहाँ प्रकाशितवाक्य 14:9 से 12 में हैं, एक तीसरा स्वर्गदूत परमेश्वर की ओर से एक संदेश लाता है।

यदि कोई पशु और उसकी छवि की पूजा करता है और अपने माथे या हाथ पर छाप प्राप्त करता है, तो वह भी परमेश्वर के क्रोध की मदिरा पीएगा, जो उसकी आँखों के प्याले में पूरी शक्ति से डाली जाएगी, और उसे पवित्र स्वर्गदूतों और मेम्ब्रे की उपस्थिति में आग और गंधक से पीड़ा दी जाएगी। और उनकी पीड़ा का धुआँ हमेशा-हमेशा के लिए उठता रहेगा, और उन्हें दिन-रात चैन

नहीं मिलेगा, ये पशु और उसकी छवि के उपासक और जो कोई भी छाप या उसका नाम प्राप्त करता है। इन मजबूत शब्दों के बाद, यूहन्ना सांत्वना देने वाले शब्द कहता है।

बीच में, वह एक और बात कहता है। यहाँ संतों के धीरज का आह्वान है, जो परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं और यीशु में अपना विश्वास रखते हैं। और यहाँ सांत्वना भरे शब्द आते हैं।

और मैंने स्वर्ग से एक आवाज़ सुनी, जो कह रही थी, यह लिखो, धन्य हैं वे जो अब से प्रभु में मरते हैं। वास्तव में धन्य हैं, आत्मा कहती है, वास्तव में धन्य हैं, आत्मा कहती है, कि वे अपने परिश्रम से विश्राम कर सकते हैं, क्योंकि उनके कर्म उनके पीछे चलते हैं। यूहन्ना विश्वासियों के उनके परिश्रम से धन्य विश्राम की तुलना, पद 13, खोए हुए व्यक्तियों के लिए कभी न खत्म होने वाले विश्राम की कमी से करता है।

पहली नज़र में, यूहन्ना के शब्द हैरान करने वाले लगते हैं। धन्य हैं वे जो मरे हुए हैं, पद 13. लेकिन जब हम पूरे वाक्य पर विचार करते हैं, तो हमारी घबराहट खुशी में बदल जाती है।

धन्य हैं वे मृतक जो अब से प्रभु में मरते हैं। संदर्भ बस दो क्षेत्रों, स्वर्ग और नरक, अधिक सटीक रूप से नरक और स्वर्ग, और उनके निवासियों को एक साथ रखता है। नरक की पीड़ा और स्वर्ग की खुशियों के प्रकाश में, यूहन्ना प्रभु में शब्द का प्रयोग पौलुस की मसीह भाषा के समान तरीके से करता है।

बेस्ली मरे ने बिल्कुल सही कहा है। उद्धरण: जो मरे हुए प्रभु में मरते हैं, उनके लिए मृत्यु का भय समाप्त हो गया है, क्योंकि वे उससे जुड़ गए हैं, जिसने अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा उनके लिए मृत्यु पर विजय प्राप्त की है। प्रकाशितवाक्य 14, 13 विश्वासियों के किसी विशेष समूह को चिह्नित नहीं करता है, बल्कि उन सभी का वर्णन करता है।

यह पाठ अक्सर विश्वासियों के अंतिम संस्कार में उद्धृत किया जाता है, क्योंकि यह उद्धरण उन लोगों को धन्य घोषित करता है जो मसीह यीशु के साथ आध्यात्मिक एकता की स्थिति में मृत्यु को प्राप्त होते हैं, जैसा कि रॉबर्ट मौस ने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पर अपनी टिप्पणी में समझाया है। शायद इन व्याख्यानों को धन्यवाद के एक शब्द के साथ समाप्त करना उचित है। दयालु पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, हम आपको एक महान उद्धार के लिए धन्यवाद देते हैं, जो वास्तव में, हमारी समझ से परे है।

बेटे से मिलाने के लिए धन्यवाद देते हैं। हम आपको धन्यवाद देते हैं, पवित्र आत्मा, हम में वह कार्य करने के लिए, और हम आपको धन्यवाद देते हैं कि यह हमें आपके लोगों के रूप में दावा करता है, वास्तव में अब और हमेशा के लिए हमारे लिए अनुग्रह लागू करता है। हम मसीह के साथ अपनी एकता में आनन्दित होते हैं।

हम प्रार्थना करते हैं कि आप कृतज्ञ, पवित्र और प्रेमपूर्ण जीवन जियें। और हम पवित्र आत्मा की शक्ति में, हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा आपकी स्तुति करते हैं। आमीन।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा पवित्र आत्मा और मसीह के साथ एकता पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 20 है, मसीह के साथ एकता और व्यवस्थित धर्मशास्त्र, चर्च, संस्कार, ईसाई जीवन, और फिर इब्रानियों में रहस्योद्घाटन के माध्यम से मसीह के साथ एकता।